हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण

युनिट-1

(1) संज्ञा का अर्थ और प्रकार
(2) सर्वनाम की परिभाषा और उसके प्रकार
(3) क्रिया की परिभाषा और उसके प्रकार

युनिट-1

प्र.1 संज्ञा का अर्थ और परिभाषाः

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं जिससे किसी वस्तु, जगह और जीव के नाम का बोध हो उसे संज्ञा कहते हैं ।

भेदः

(1) जातिवाचक संज्ञा
(2) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(3) गुणवाचक संज्ञा
(4) भाववाचक संज्ञा
(5) द्रव्यवाचक संज्ञा

(1) जातिवाचक संज्ञाः

जिन संज्ञाओं से एक ही प्रकार की वस्तु अथवा व्यक्तिओं का बोध हो उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे मनुष्य, घर, पहाड़, नदी इत्यादि। जैसे मनुष्य कहने से संसार की मनुष्य की जाति का पता चलता है । स्त्री-पुरुष, बालक, लड़का या लड़की ।

(2) व्यक्तिवाचक संज्ञाः

जिस शब्द से किसी एक वस्तु या व्यक्ति का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे राम, गांधी, गंगा, काशी इत्यादि। जैसे राम गांधीजी कहने से एक एक व्यक्ति का बोध होता है । ठीक उसी तरह गंगा या काशी कहने से नदी और नगर का बोध होता है उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

(3) गुणवाचक संज्ञाः

जिस संज्ञा से वस्तु अथवा गुण का बोध हो उसे गुणवाचक अथवा समूहवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे उदाहरण व्यक्तियों का समूह, वस्तुओं का समूह, सैनिकों का समूह इत्यादि ।

(4) भाववाचक संज्ञाः

जिस संज्ञा से व्यक्ति या वस्तु की भाव का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे लंबाई-चौड़ाई, नम्रता-विनम्रता, अपना-पराया, समीप-निकट इत्यादि ।

(5) द्रव्यवाचक संज्ञाः

जिस संज्ञा से नाप-तोलवाली वस्तु का बोध हो उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। इस संज्ञा में बहुवचन का उपयोग नहीं होता । जैसे लोहा, सोना, चाँदी, पानी, तेल और तेजाब, पेट्रोल, डिजल, केरोसीन ।

प्र.2 सर्वनाम की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों की चर्चा कीजिए ।

- **सर्वनाम की परिभाषाः**

सर्वनाम उस शब्द को कहते हैं जो पूर्वा पर संबंध से किसी भी संज्ञा के बदले आता है उसे सर्वनाम कहते हैं । जैसे मैं, तुम, वह और, वे इत्यादि । हिन्दी में कुल 11 (ग्यारह) सर्वनाम है । जैसे मैं, तुम, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन और क्या का प्रयोग किया जाता है परंतु अधिकांश प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के मुख्यतः छः प्रकार बताए गए हैं ।

❖ भेदः

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम
(2) निजवाचक सर्वनाम
(3) निश्चयवाचक सर्वनाम
(4) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(5) संबंधवाचक सर्वनाम
(6) प्रश्नवाचक सर्वनाम

(1)पुरुषवाचक सर्वनामः

पुरुषवाचक सर्वनाम पुरुषों (स्त्री और पुरुष) के नाम के बदले आते हैं । उत्तम पुरुष में लेखक या वक्ता आते हैं । मध्यम पुरुष में पाठक या श्रोता आते हैं और अन्य पुरुष में लेखक और श्रोता को छोड़कर अन्य लोग भी आ सकते हैं । जैसे उत्तम पुरुष – मैं, हम । मध्यम पुरुष – तू, तुम और आप । अन्य पुरुष – वह, वे, यह, ये ।

(2) निजवाचक सर्वनामः

निश्चयवाचक सर्वनाम का रूप आप है। पुरुषवाचक या अन्य पुरुषवाचक वाले वाक्य में आपका प्रयोग अलग होता है । जैसे आपने खाना खाया ? आप कहाँ गए थे ?

(3) निश्चयवाचक सर्वनामः

जिस सर्वनाम से वक्ता के पास या दूर की किसी वस्तु के निश्चय का बोध होता है उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे – यह, वह

उदाहरणः यह कोई नया काम नहीं है।
रोटी मत खाओ क्योंकि वह जली है ।

(4) अनिश्चयवाचक सर्वनामः

जिस सर्वनाम में किसी का बोध ना हो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे कोई और कुछ

उदाहरणः कहीं ऐसा न हो कि कोई आ जाए ।
कुछ भी खाना खा लो ।

(5) संबंधवाचक सर्वनामः

जिसे सर्वनाम से किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थायी किया जाए उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे – जो, सो

उदाहरणः वह कौन है जो पड़ा सो रहा है ।
वह जो न करे सो थोड़ा ही है ।

(6) प्रश्नवाचक सर्वनामः

प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं ।

जैसे – 1. कौन आता है ?

2. तुम क्या कर रहे हो ?

प्र.3 क्रिया की परिभाषा देते हुए उसके प्रकार की चर्चा कीजिए।

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाए उसे क्रिया कहते हैं । जैसे पढ़ना, लिखना, खाना खाना, पानी पीना जैसे क्रिया विकारी शब्द है । जिसके रूप, लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलते हैं इसे भी क्रिया कहते हैं ।

क्रिया के भेद या प्रकारः क्रिया के मूलतः दो भेद बताए गए हैं।

(1) प्रेरणार्थक क्रिया (2) संयुक्त क्रिया

(1) प्रेरणार्थक क्रिया - जब कर्ता किसी कार्य को स्वयं न करके किसी दूसरे से कार्य करवाएँ उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं ।

उदाहरणः राम जाग उठा ।

गोविंद ने राम को जगाया ।

गोविंद ने राम को जगवाया ।

(2) संयुक्त क्रिया – जो क्रिया किसी क्रिया अथवा संज्ञा जैसे शब्द के साथ दूसरी क्रिया का योग से नया शब्द बने उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं ।

जैसे – संज्ञा और क्रिया आरंभ करना ।

उदाहरणः क्रिष्ण बासुरी बजाते है ।

विशेषण और क्रियाः

मीठा लगना, नष्ट करना इत्यादि । यह सकर्मक क्रिया है । सकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जिसका कर्म हो या जिसके साथ कर्म की संभावना हो । जैसे श्याम आम खाता है ।

अकर्मक क्रियाः

जिन क्रियाओं का व्यापार और कल कर्ता पर हो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं ।

जैसे – सत्ता है और नहीं भी ।

संयुक्त क्रियाओं के भेद अर्थ के आधार पर ग्यारह बताए गए हैं।

(1) आरंभबोधक:

जिस संयुक्त क्रिया के आरंभ होने पर क्रिया का बोध होता है उसे आरंभ बोधक क्रिया कहते हैं । जैसे – आप लिख रहे हैं ।

(2) समाप्ति बोधक संयुक्त क्रियाः

जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया को पूर्णता का बोध हो उस क्रिया को समाप्ति बोधक क्रिया कहते हैं, जैसे – वह खाना खा चुका है । वह कॉलेज से घर जा चुका है। वह सो रही है ।

(3) अवकाश बोधक संयुक्त क्रियाः

जिससे क्रिया का निष्पन्न होने का बोध हो उसे अवकाश बोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं । जैसे – वह बहुत मुश्किल से सो नहीं पाया या सो पाया ।

(4) अनुमती बोधक संयुक्त क्रियाः

जिससे कार्य करने या होने अनुमति मिले उसे अनुमति बोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं । जैसे – शिक्षक ने घर जाने के लिए विद्यार्थियों को छुट्टी दे दी।

(5) नित्यता बोधकः

नित्यता बोधक क्रिया होने का बोध हो उसे नित्यता बोधक क्रिया कहते हैं। जैसे – कुछ दिनों से बर्फ वर्षा हो रही है।

(6) आवश्यकता बोधकः

जिससे कार्य की आवश्यकता का बोध हो उसे आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं । जैसे – यह काम मुझे ही करना पड़ता है ।

(7) निश्चय बोधक संयुक्त क्रियाः

जिस संयुक्त क्रिया निश्चय बोधकता का बोध हो उसे निश्चयबोधक क्रिया कहते हैं ।

जैसे – मैं ही उसे मारूँगा ।

(8) इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाः

इसमें क्रिया करने की इच्छा का बोध होता है उसे इच्छा बोधक क्रिया कहते हैं । जैसे – मैं परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास होने की इच्छा रखती है ।

(9) अभ्यास बोधक संयुक्त क्रियाः

इस क्रिया में अभ्यास का बोध होता है । उसे अभ्यास बोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं । जैसे – परीक्षा में खूब परिश्रम करेंगे तो ही प्रथम श्रेणी में पास होंगे ।

(10) शक्ति बोधकः

इससे कार्य करने का बोध होता है । जैसे – मैं जा सकती हूँ । अथवा मैं सफलता प्राप्त कर सकती हूँ ।

(11) पुनरुक्ति बोधकः

जब दो समानार्थक शब्द अथवा समान ध्वनि वहनी क्रियाओं का संयुक्त बोध होता है उसे पुनरुक्ति बोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं । जैसे– वह पढ़ा-लिखा व्यक्ति है ।

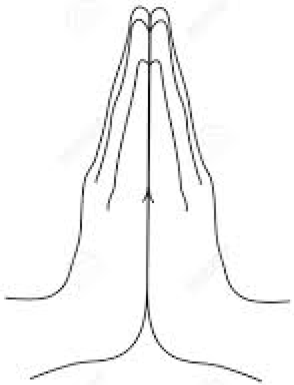

धन्यवाद